THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212
February 2024 Vol.4(2), 802-804

Popular Article

अफ्रीकन स्वाइन फिवर या ज्वर (*African Swine Fever*): कारण एवं प्रबंधन

राजीव रंजन[1], जितेंद्र कुमार बिस्वाल[1], स्मृतिरेखा मल्लिक[1], रवीद्र कुमार[2] एवं संजित कुमार[2]
[1]भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय खुरपका मुँहपका रोग संस्थान, भुवनेश्वर- 752050, ओड़ीशा
राँची पशु महाविद्यालय, कांके, राँची, झारखंड
https://doi.org/10.5281/zenodo.10724171

अफ्रीकन स्वाइन फिवर (ए.एस.एफ) क्या है?

ए.एस.एफ घरेलू अथवा जंगली सूअरों/ सूकरों में फैलने वाला एक अत्यधिक विषाणुजनित संक्रमित बीमारी है। जोकि अफ्रीकन स्वाइन फिवर विषाणु के कारण होता है। इस बीमारी से 100% सूअरों की मृत्यु हो सकती है। सूकर के अलावा यह किसी और पशुओं या मनुष्यों को संक्रमित नही करता है एवं मानव स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस रोग से सूअरों में असामान्य मृत्यु होती है। जिससे कि सूअरों की जनसंख्या एवं कृषि अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भारत सहित कई देशों में सूअर घरेलू आय का प्राथमिक स्रोत हैं। विश्व के कई देशों में यह बीमारी ने कई सूअर फार्मों को तबाह कर दिया है, जो अक्सर लोगों की आजीविका का मुख्य आधार है। दुनिया में भर में खाद्य सुरक्षा के दृष्टि से सूअर का मांस पशु प्रोटीन के एक मुख्य स्रोत है। अतः यह बीमारी भारत सहित विश्व के कई देशों को प्रभावित कर रही है।

ए.एस.एफ रोग का स्थिति:

अफ्रीकी स्वाइन बुखार का पहला ज्ञात मामला 1921 में केन्या में सामने आया था। 2018 में यह विषाणु एशिया महादेश में आया, जिससे कई देशों में कुल सुअर आबादी के 10 प्रतिशत से अधिक प्रभावित हुए। भारत में अफ्रीकी स्वाइन बुखार का पहला ज्ञात मामला 29 अप्रैल 2020 को, भारत ने असम और अरुणाचल प्रदेश राज्य में सामने आया था। इसने भारत के सुअर पालन उद्योग को विशेष रूप से गोवा, केरल और पूर्वोत्तर राज्यों में गंभीर रूप से प्रभावित किया था। किसानों की आजीविका बुरी तरह प्रभावित हुई क्योंकि इस विषाणु के कारण उनके पशुधन नष्ट हो गए।

ए.एस.एफ रोग का कारण:

ए.एस.एफ विषाणु डबल-स्ट्रैंडेड डीएनए वायरस, एस्फ़रविरिडे वायरस परिवार से संबंधित है जो अफ्रीकन स्वाइन फीवर का प्रेरक एजेंट है। एएसएफवी एक बड़ा, इकोसाहेड्रल, डबल-स्ट्रैंडेड डीएनए वायरस है जिसमें 189 किलोबेस के रैखिक जीनोम में 180 से अधिक जीन होते हैं। ऊष्मायन अवधि 4 से 19 दिनों तक होती है।

रोग का फैलाव या प्रसार:

- यह विषाणु पर्यावरण में अत्यधिक प्रतिरोधी है। जिसके कारण यह विषाणु कपड़े, जूते, पहियों और अन्य अजीवित सामग्रियों पर जीवित रह सकता है। यह विषाणु सूअर उत्पाद जैसे कि हैम, सॉसेज, बेकन इत्यादि में भी जीवित रह सकता है। जिसके कारण यह बीमारी एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैल सकता है।
- यह छूआ-छूत का रोग है, जिसमें बीमार सूकर के सम्पर्क से स्वस्थ सूकर में रोग फैलता है साथ ही साथ बीमार सूकर के मलमूत्र एवम् दूषित दाना पानी से भी यह रोग फैलता है।
- सूकर पालक/ सूकर देखभाल करने वाले कर्मियों के दूषित जूते च्प्पल, वस्त्रों आदि से भी इस रोग का प्रसार होता है।
- एक फार्म से दूसरे फार्म मे यह बीमारी फार्म उपकरण, वाहन, सुअर फार्मों के बीच सूअरों के साथ काम करने वाले लोगों से फैलता है।

रोग के प्रमुख लक्षण:

रोग के लक्षण विभिन्न कारकों जैसे की विषाणु के विरुलेंस, सूअर की नस्ल, संक्रामक खुराक इत्यादि पर निर्भर करता है। इस बीमारी की पहचान नीचे दिये गए लक्षणों के द्वारा कर सकते है।

- तीव्र ज्वर (40.5 डिग्री सेल्सियस या 105 डिग्री फरेनहाइट)।
- सांस लेने में कठिनाई होना।
- भूख न लगना या खाना छोड़ देना।
- उल्टी एवं दस्त (कभी-कभी खूनी दस्त)।
- कान, छाती, पेट एवं पैरों में लाल चकत्तेदार धब्बा या लाल होना।
- गर्भवती मादा सूअरों में गर्भपात होना।
- लड़खडाते हुए चलना।
- 1 से 14 दिनों में मृत्यु होना।
- किसी किसी में मृत्यु के उपरांत मुख एवं नाक से रक्त का स्राव होना।

उपचार, बचाव एवं रोकथाम:

- इस रोग का कोई ईलाज या टीका नहीं है।
- इस बीमारी को रोकने का एकमात्र उपाय है कि संक्रमित पशु की यथाशीघ्र पहचान एवं सभी प्रभावित सूअरों की हत्या (मानवीय विधि)।
- सतर्कत्ता एवं अच्छी जैव सुरक्षा ही इस रोग से बचाव का एक साधन है। इसलिए फार्म या घर पर अच्छी एवं सख्त जैव सुरक्षा स्थापित किए रहना चाहिए।

क्या करें ?	क्या ना करें ?
• नए सूअरों को कम से कम 30 दिनों के लिए अलग रखें और नैदानिक लक्षणों पर ध्यान दें। • असामान्य या अत्यधिक संख्या में मृत्यु होने पर निकटतम पशुचिकित्सालय में सूचना दें। • मृत सूकर, संक्रमित भोजन एवं मल को गहरा गड्ढा खोदकर चूने के साथ दफना दें।	• संक्रमित क्षेत्र में सूअरों की खरीद-बिक्री ना करें। • सूकर फार्म में अनावश्यक आवाजाही पर रोक लगावें। • संक्रमित क्षेत्र में सूअर मांस की बिक्री पर रोक लगावें।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 28.02.2024

• उपकरण, सामग्री, वाहन एवं सूकर बाड़े की सफाई प्रतिदिन उपयुक्त कीटाणुनाशक घोल से साफ और कीटाणुरहित करें। • बाह्य परिजीवी (चमोकन, सॉफ्ट/नरम टिक) पर नियंत्रण करें। • यदि पशुपालक सूअरों को होटल जूठन अवशेष भोजन के रुप में देते हैं, तो वैसी स्थिति में भोजन को 20-30 मिनट उबालकर दें। • अपने फार्म या सुअर बाड़ों को जंगली सूअरों के संपर्क में आने से सुरक्षित घेरा से रोकें।	• सूकर के बाडे में अन्य जाति के पशुओं के आवाजाही पर रोक लगावें। • ऐसे लोगों को अपने फार्म में न आने दें जो संक्रमित क्षेत्र में अन्य सूअरों के संपर्क में रहे हों। • बचे हुये खानपान एवं कचरे को स्वस्थ सूअरों को न खिलायें।

आकस्मिक/ असामान्य संख्या में मृत्यु होने पर मृत सूअरों के निस्तारण हेतु आवश्यक सलाह ?

- मृत सूअरों को इधर-उधर खुले में ना फेंके।
- मृत सूअरों (कचरों सहित) को लकड़ियों पर रख कर जला दें अथवा मृत सूअरों को गड्ढा खोदकर दफना दें। दफनाने की विधि इस प्रकार है-
    - गड्ढे की गहराई इतनी हो कि मृत सूकर को रखने के पश्चात कम से कम 1-1.5 मीटर गहराई बची रहे।
    - मृत सूकर पर प्रचुर मात्रा में चूना एवं नमक डाल दें और उसके ऊपर मिट्टी भर दें।
    - दफनाए हुए जगह को घेर दें।
    - दफनाई हुई जगह में मिट्टी का भराव इस प्रकार करें की बारिश का पानी या नाली क पानी वहाँ नहीं जाए।

चूंकि इस विषाणु से निपटने के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है, इसलिए भारत में सुअर पालन उद्योग पर लगातार खतरा बना रहेगा और कई किसानों का जीवनोपार्जन पर पड़ता रहेगा। भविष्य में एएसएफ को सफलतापूर्वक रोकने और नियंत्रित करने के लिए जंगली सूअर की आबादी का अच्छा ज्ञान एवं इसका प्रबंधन तथा पशु चिकित्सा सेवाओं, वन्यजीव और वानिकी अधिकारियों के बीच अच्छे समन्वय होना चाहिए।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
Published 28.02.2024